International Journal of Information Movement Vol.I Issue VIII (December 2016)
Website: www.ijim.in ISSN: 2456-0553 (online) Pages 60-66

केदारनाथ सिंह की काव्य-संवेदना

दिलबाग सिंह
शोधार्थी, पीएच.डी. (हिन्दी)
दक्षिण भारत हिन्दी प्रचार सभा, मद्रास

हिन्दी की नई कविता का मुख्य तत्व रचना और रचनाकार का द्वन्द्व है। अज्ञेय जैसे कवि कला को इसी अन्तर्द्वन्द्व की उपज मानते हैं। केदारनाथसिंहजी 'तीसरा सप्तक' के कवि होने के कारण उनकी रचना- प्रक्रिया भी कलाकार के द्वन्द्व से अप्रभावित नहीं रह सकती। अतः नये कवि के रूप में यदि केदार जी की कविता का अध्ययन करना है तो उनके व्यक्तिगत जीवन एवं वैचारिक संदर्भों को समझना होगा। हिन्दी की नई कविता का मुख्य तत्व रचना और रचनाकार का द्वन्द्व है। अज्ञेय जैसे कवि कला को इसी अन्तर्द्वन्द्व की उपज मानते हैं। केदारनाथ सिंह जी तीसरा सप्तक के कवि होने के कारण उनकी रचना- प्रक्रिया भी कलाकार के द्वन्द्व से अप्रभावित नहीं रह सकती। अतः नये कवि के रूप में यदि केदारजी की कविता का अध्ययन करना है तो उनके व्यक्तिगत जीवन एवं वैचारिक संदर्भों को समझना होगा।

केदारनाथ सिंह का जन्म पूर्वी उत्तरप्रदेश के बलिया जिले के चकिया नामक छोटे से गाँव में सात जुलाई १९३४ को हुआ। आपके पिता डोमन सिंह एक साधारण किसान थे और बाबा कलकत्ते के एक बैंक के कर्मचारी थे। केदारनाथ सिंह की माता श्रीमती लालझरी देवी एक साधारण गृहिणी थी। आपकी दादी से खूब लाड-प्यार मिला जिससे आपने कहा कि आपका पालन-पोषण दादी ने किया। केदारजी का परिवार कृषि से जुड़ा हुआ था। आप परिवार के इकलौते बेटे थे। इससे घरवालों का लाड-प्यार भी खूब मिला था। आपके पिताजी संगीत तथा राजनीति में सक्रिय भाग लेते थे जिसका प्रभाव कवि पर पड़ा। आपके घर की आर्थिक स्थिति उतनी ठीक नहीं थी। आमदनी थोडी-सी ज़मीन पर निर्भर थी। परिवार में उच्च शिक्षा प्राप्त करने वाला प्रथम व्यक्ति केदारजी हैं।

केदारनाथ सिंह की प्रारंभिक शिक्षा गाँव में हुई। कई मील पैदल चलकर स्कूल जाना पड़ता था और वह भी नंगे पाव। अपनी प्रारंभिक शिक्षा के बारे में केदारजी का संस्मरण देखें- ''प्राथमिक शिक्षा तक मैं गाँव में था। उसके बाद बनारस के उदय प्रताप कॉलेज में आ गया जहाँ के प्राइमरी सैक्शन में दाखिला चौथी कक्षा में हुआ।''[१] बनारस के हिन्दू विश्वविद्यालय से आपने एम. ए. तथा पी.एच.डी. की उपाधि प्राप्त की। केदारजी की शादी हाइस्कूल का छात्र रहते वक्त हुई। घरवालों के चहेते होने के कारण कम उम्र की शादी का विरोध वे न कर सके। शादी के दस-बारह वर्ष बाद ही दाम्पत्य जीवन की शुरुआत हुई। हाइस्कूल से एम.ए. तथा शोध-कार्य समाप्त करने तक वे हास्टल में अकेले रहे। इस समय आपकी पत्नी बच्चों के साथ घर-बार संभालती हुई गाँव में रही। उनके पाँच बेटियाँ और एक बेटा है। १९७६ में आपकी पत्नी कैंसर-पीड़ित होकर चल बसी और आप अपने बच्चों के साथ दिल्ली में रहने लगे।

केदारनाथ सिंह स्वभाव से शान्त एवं सरल हैं। कम बोलना उनके व्यक्तित्व की पहचान है। 'तीसरा सप्तक' के वक्तव्य में अपने स्वभाव के बारे में केदारजी ने यों कहा है- ''कविता, संगीत और अकेलापन तीन चीज़ें बेहद प्रिय है। मित्र बहुत कम बना पाता हूँ, क्योंकि एक व्यावहारिक आदमी में जो खुलापन होना चाहिए, उसका मुझमें नितान्त अभाव है।''[२] यद्यपि कवि ने ऊपर्युक्त वक्तव्य में अपनी अन्तर्मुखी वृत्ति की ओर संकेत किया है तो भी आपकी गाढ़ी मित्रता एवं मेल-मिलाव को लेकर अनेक सूचनाएँ प्राप्त हुई है। डॉ. शेरपालसिंह ने केदारजी के साथ भेंट-वार्ता में यों बताया है- ''इतना साधारण अपनत्व से ओत-प्रोत व्यक्तित्व, मैंने कभी कामना भी न की थी। इसी प्रकार उनसे मिलकर बार-बार मिलने को मन करता है।''[३] केदारजी एक सफल अध्यापक रहे हैं और आपके शिष्यों केलिए आप आदर्श रहे हैं।

केदारजी पेशे से अध्यापक रहे हैं। एम.ए. की परीक्षा उत्तीर्ण करने के पश्चात केदारनाथ सिंह जी वनारस के ख्याति प्राप्त यु.पी. कॉलेज के उच्चतर माध्यमिक विभाग में अस्थायी पद पर अध्यापन कार्य करने लगे। इसके बाद सेंट एण्ड्रजूय कॉलेज गोरखपुर में अध्यापक बने। थोड़े समय बाद पडौरना के उदित नारायण कॉलेज में विभागाध्यक्ष एवं प्रिंसिपल बन गए। पडौरना से वे जे.एन.यू. के हिन्दी विभाग में १९७६ में आ गये और सेवानिवृत्त होने के बाद भी आप वहीं भाषा विभाग में अतिथि आचार्य के रूप में कार्यरत रहे।

अनेक पुरस्कारों को प्राप्त करने पर भी आप पुरस्कार या सम्मान के बिल्कुल आकांक्षी नहीं हैं। आपकी एक कविता इस ओर संकेत देती है-

''नाम कमाने की धुन में
जब यहाँ तक आया
जिसमें कोई चिड़िया अण्डा नहीं देती।''[४]

कवि यहाँ नाम कमाने या यशोलाभ के लिए कुछ कर दिखाने की निरर्थकता को रेखांकित करते हैं।

केदारनाथ सिंह साहित्य के लोक-तंत्र के सच्चे अर्थों में हिमायती हैं। साहित्यिक प्रतिमानों के संदर्भ में चौकन्ने कवि विचार, विचारधारा, दलगत विचार जैसे मुद्दों पर व्यापक और अर्थगर्भ दृष्टि रखते हैं। विचार और विचारधारा के बीच के फर्क को रेखांकित करते हुए कहते हैं कि- ''जीवन-जगत के बारे में उसका विचार जितना ही गहरा और पुख्ता होगा, उसकी रचना उतनी ही मज़बूत होगी।''[५] राजनीति के संबन्ध में उनका अपने मौलिक विचार और दृष्टिकोण है। इसलिए वे विचारधारा को राजनीतिक दल-विशेष की प्रतिबद्धता से अलग मानते हैं। कवि राजनैतिक विवेक को दलीय सीमाओं से बाहर विस्तृत करने की प्रस्तावना करते हैं।[६] कवि के अनुसार विचारधारा और कला के बीच स्पष्ट संतुलन की ज़रूरत है। नहीं तो विचारधारा नारे की शक्ल में तब्दील हो जायगी ओर रचना की कलात्मक चेतना में भारी क्षति पहूँच जायगी।[७] कवि में यह संतुलन सर्वत्र दर्शनीय है।

केदारनाथसिंह की आस्था प्रगतिशील मूल्यों के प्रति है। 'तीसरा सप्तक' के वक्तव्य में वे न सिर्फ अपनी तत्कालीन दृष्टि का परिचय देते हैं, बल्कि भावी काव्य-विकास के वैचारिक आधार की ओर भी संकेत करते हैं। कवि के ही शब्दों में, ''समाज के प्रगतिशील तत्वों और मानव के उच्चतर मूल्यों की परख मेरी रचनाओं में आ सकी है या नहीं, मैं नहीं जानता, पर उनके प्रति मेरे भीतर एक विश्वास, एक लालसा, एक लपट ज़रूर है, जिसे मैं हर प्रतिकूल झोंके से बचाने की कोशिश करता हूँ, करता रहूँगा।''[८] साथ ही कला के संघर्ष को वे कवि के आत्मसंघर्ष से अलग नहीं मानते। कवि की कुछ कविताओं में इस संघर्ष की झलक स्पष्ट दर्शनीय हैं। कहने का तात्पर्य यह है कि केदारनाथ सिंह के वैचारिक रुझान के विकास में प्रगतिशील मूल्यों और आत्मसंघर्ष की निर्णायक भूमिका रही है। कवि की प्रगतिशील विचारधारा को अन्य प्रगतिशील कवियों से अलग स्थापित करते हुए आलोचक नन्दकिशोर नवल द्वारा दी गई टिप्पणी ध्यान देने योग्य है- ''अन्य प्रगतिशील कवियों के पास दर्शन का पूर्वनिर्दिष्ट गंतव्य ही नहीं था, अनुभव का बना-बनाया मार्ग भी था, फिर वे क्यों अपने को किसी असमाप्य आत्मसंघर्ष में डालते?... वे तो इतिहास का संदेश सुनते थे, जिसमें वर्ग संघर्ष के तीव्र कोलाहल के अलावा बाकी सारी आवाज़ें डूब जाती थीं। इस माहौल में केदारजी ने कला के प्रसंग में संघर्ष की ओर अपने मन को बराबर खुला रखने की बात की, जिससे अपने आस-पास की छोटी-से-छोटी वास्तविकता को भी वे चित्रित कर सके, तो उसका मतलब यह था की वे अपने को प्रगतिशील काव्यधारा का अंग बतलाते हुए यह भी सूचित कर रहे थे कि स्वीकृत प्रगतिशील कवियों से उसका पंथ कहाँ अलग होता है।''[९] इससे जाहिर है कि सूक्ष्म से सूक्ष्म घटनाओं में उपस्थित छोटे से छोटे क्षण की भी दूर तक व्याप्ति की अनुगूँज कवि की नज़रों से ओझल नहीं हुई है। यही वजह है कि वे लगातार वैचारिक विकास के साथ प्रौढ़ता की ओर बढ़ते नज़र आते हैं।

विचारधारा और साहित्य के जटिल रिश्ते को लेकर केदारनाथ सिंह यों कहते है- कवि के पास अपना विचार होना चाहिए। केदारजी साहित्य को सहज सामाजिक प्रक्रिया मानते हैं। इस महत् 'तमसो मा ज्योतिर्गमया' के लिए उन्होंने रचनाधर्मिता का पंथ चुना है ताकि वह आम आदमी की जड़ तक पहुँच सके। जिस क्षेत्र से हमारा जुड़ाव जितना ही गहन होगा उसकी जानकारी भी उतनी ही तीव्र होगी। अतः संबोध्य से जुड़े रहने की आकांक्षा उनमें बचपन से ही थी। कवि के शब्दों में, ''जिस दिन मेरी यह आकांक्षा खत्म हो जायेगी मैं चुप हो जाऊँगा।

दरअसल लिखना चुप हो जाने के विरुद्ध एक खामोश लडाई का ही दूसरा नाम है।''[१०] साहित्यकार की प्रतिबद्धता को लेकर आपके विचार द्रष्टव्य है- ''मानव भविष्य के प्रति प्रतिबद्धता होनी चाहिए, दल की प्रतिबद्धता को मैं हितकर नहीं मानता।''[११] कवि का साहित्यिक मूल्यबोध उन्हें अनोखी ऊँचाई प्रदान करता है।

काव्य-भाषा के संबन्ध में केदारजी ने यत्र-तत्र विचार व्यक्त किये हैं। वे भाषा को रचना-प्रक्रिया का एक अहम हिस्सा मानते हैं। उनका मानना है कि भाषा के माध्यम से किसी रचनाकार की रचना-प्रक्रिया को गहराई से समझा जा सकता है। ''रचना-प्रक्रिया का प्रामाणिक धरातल जहाँ उसके सूत्र पकड़े जा सकते हैं, भाषा है, इसलिए किसी कविता की प्रक्रिया की पड़ताल के लिए ज़रूरी है, उसके विन्यास की तहों में प्रवेश किया जाए, शायद इस तरह उसकी प्रक्रिया का कोई धागा हाथ लग सके।''[१२] भाषा वास्तव में आदिम मनोवृत्तियों का संचित स्वरूप है। इसलिए वह सामुदायिक स्मृतियों को सुरक्षित रखने का कारगर माध्यम भी है। रचना-प्रक्रिया में भाषा की चेतना को लेकर कवि आगे टिप्पणी करते हैं-''जब भाषा आती है तो बहुत कुछ लेकर आती है और जो चीज़ लेकर आती है उसका उस समुदाय से गहरा रिश्ता होता है जिसके द्वारा वह ली जाती है। आखिर भाषा स्मृतियों का वह पुंज है

और विलक्षण यह है कि स्मृतियाँ पुरानी से पुरानी और एकदम ताजा भाषा में घुली-मिली होती है।''[१३] यही वजह है कवि को धान के पुआल में भी सुंदर शब्द की प्राप्ति होती है -

''फिर धीरे धीरे इस खेल में
मुझे आने लगा मजा
एक दिन मैं ने बिलकुल अकारण
एक खूबसूरत शब्द को दे मारा पत्थर
जब धान के पुआल में
वह साँप की तरह दुबका था
उसकी सुंदर चमकती हुई आँखें
मुझे अब तक याद है।''[१४]

यहाँ 'पुआल से मिले शब्द' को कवि सुंदर एवं चमक वाली कहते हुए भाषा एवं शब्द को स्मृतियों का महाकोश मानते हैं। यही महाकोश रचना-प्रक्रिया का सर्वाधिक महत्वपूर्ण उपादान भी होता है। केदारजी की मातृभाषा भोजपुरी है। आपकी राय में, लोक-भाषाएँ हिन्दी भाषा की ताकत के लिए अत्यंत आवश्यक हैं।

केदारजी ने शब्द की महत्ता को रेखांकित करने के साथ-साथ कविता में बिंब की अनिवार्यता पर भी बल दिया है। ''कविता में मैं सबसे अधिक ध्यान देता हूँ बिंब-विधान पर।''[१५] विषय को वह मूर्त और ग्राह्य बनाता है, रूप को संक्षिप्त और दीप्त। लेकिन इस वक्तव्य को आधार बनाते हुए आलोचकों ने आपको बिंबवादी तक घोषित किया। लेकिन आप बिंबवादी नहीं हैं। केदारनाथ सिंह अपने ऊपर थोपे आरोप का यों जवाब देते हैं- ''मेरा नाम बिंब के साथ इसलिए जुड़ गया कि मैं बिंब पर काम कर रहा था।''[१६] कविता में बिंब के पक्ष में बोलते हुए कवि कहते हैं- बिंब पाठक को रोकता चलता है और एक हद तक उसे विवश करता है कि वह रुके, सोचे और समग्र कविता के बारे में तुरत-फुरत कोई फैसला न दे दे। यह रचानात्मक बाधा एक ऐसी कसौटी है जिस पर हम कविता का श्रेणी विभाजन कर सकते हैं। मुक्तिबोध की कविताएँ शायद इस तरह की बाधा सबसे अधिक उपस्थित करती हैं और मुक्तिबोध जिन कारणों से बडे. कवि है, उनमें यह प्रमुख हैं।[१७] आप कविता में बिंब को केवल साधन मात्र मानते हुए बिंब के बारे में अपने 'तीसरा सप्तक' की मान्यता पर टिप्पणी करते हुए कहते हैं- ''कविता बिंब बहुल न होती- बिंबमय या बिंबात्मक होती है और जहाँ बिंबों का समुच्चय मात्र होगा, वहाँ कविता कमज़ोर होगी और उसका मूल आशय गायब हो जायगा। मेरी शुरू की कविता में बिंब की अधिकता ज़रूर है, लेकिन मैं क्रमशः बिंब से मुक्त होते जाने की ओर अग्रसर हुआ हूँ।''[१८]

बिंब के समान कविता में छन्द की स्थिति पर भी आप अपना विचार यों व्यक्त करते हैं। ''हिन्दी में छन्द हाशिये पर है। मैं इस स्थिति को सुखद और स्वास्थ्य कर नहीं मानता।''[१९] निराला का संदर्भ देते हुए आप कहते हैं कि निराला ने अपना सर्वोत्तम योगदान छन्द में ही दी है। वकौल कवि केदारनाथ सिंह निराला के इस द्वैत को समझने की ज़रूरत है और शायद इसी के भीतर हिन्दी कविता के भावी विकास की कुंजी छिपी है।[२०] कहने का तात्पर्य यह है कि जिस प्रकार निराला ने मुक्त छन्द एवं गद्य की लय को अपनाते हुए उत्तम कविता को रूप दिया था ठीक उसी शैली को अपनाने के आप पक्षपाती हैं। आप 'एक दिन भक् से' शीर्षक कविता में कहते है -

''एक दिन भक् से
मूँगा मोती
हल्दी प्याज
कबीर निराला
सभी का आशय स्पष्ट हो जायेंगे''[२१]

कबीर अपने समय के यथार्थवादी कवि रहे, निराला उसी कड़ी को जोड़ते हुए आगे बढ़े। केदारनाथ सिंह कथ्य एवं भाषा-शिल्प में निराला की प्रगतिशील-चिंतन को आगे बढ़ाने में सफल रहे।

कविता के सौन्दर्य-तत्व को लेकर केदारजी का अपना खास विचार है। केदारजी के ही शब्दों में-''मेरे निकट सौन्दर्य एक व्यापक शब्द है जो मानव और प्रकृति दोनों में है और कई बार वह वहाँ भी हो सकता है जिसे सामान्यतः असुंदर समझ लिया जाता है। खास तौर से आज के समय में रचना जिस सौन्दर्य की तलाश करती है, वह अनुभव की जानी-पहचानी जगहों के बजाय

कई बार उन स्थानों में अधिक दिख सकती हैं जिन्हें लम्बे समय तक सुंदर नहीं माना जाता रहा, मसलन गधा सुंदर नहीं है, पर हुसैन के चित्र में जब वह अपनी अगली दो टाँगों को उठाकर सूर्य को देखता है तो हमें अद्‌भुत रूप से आकर्षित करता है।''[२२] केदारजी की एक कविता 'तस्वीर' में आप इस विचार को यों चित्रित करते हैं-

''दोनों के चलने में
एक अद्‌भुत तालमेल था
एक अजब-सा संगीत
जिसमें दोनों चुप थे
एक खूब गहरी और अथाह आपसदारी
जो दोनों की चुप्पी से भी
अधिक पुरानी थी''[२३]

यहाँ गधा और आदमी दोनों आगे पीछे जा रहे हैं। लेकिन कवि उनके चलने में, गहन मौन में, आपसदारी में सौन्दर्य का दर्शन करते हैं।

श्रीबुद्ध, विवेकानन्द आदि का कवि केदार पर काफी प्रभाव पड़ा है। केदारजी की बौद्ध धर्म पर अटूट आस्था रही है। खुद कवि के शब्दों में ''भारतीय दर्शन में बौद्ध दर्शन कई दृष्टियों से मुझे आकृष्ट करता रहा है।''[२४] बुद्ध के निर्वाण स्थान कुशीनगर जाकर बसने की कामना आप प्रकट करते हैं।

भारतीय ही नहीं वैश्विक धरातल पर होने वाले उपनिवेशी ताकतों व षड्यंत्रों पर वे बोलते हैं। धर्म, जाति, संप्रदाय आदि के द्वारा मानव-मानव के बीच होने वाले अलगाव व दुश्मनी की ओर भी उनकी कविता इशारा करती है-

''तुम्हें नूर मियाँ की याद है केदारनाथ सिंह
गेहुए नूर मियाँ
ठिगने नूर मियाँ

रामगढ बाजार से सुर्मा बेचकर
हर साल कितने पत्ते गिरते हैं
पाकिस्तान में।''[२५]

यहाँ स्वतंत्रता के साथ साथ विभाजन की त्रासदी की ओर कवि इशारा करते हैं। आत्मालोचन की शैली में धर्म की संकीर्ण मानसिकता के प्रति कवि अपनी प्रतिरोधी मुद्रा दर्ज करते हैं।

दूसरी एक कविता 'कुछ सवाल अपने से' में कवि सांप्रदायिकता के संकीर्ण विचार को यों व्यक्त करते हैं -

''मैं क्यों
और किस तर्क से हिन्दू हूँ
क्या मैं कभी जान पाऊँगा?''[२६]

यहाँ कवि हिन्दू, मुसलमान, सिख, फारसी आदि जातिगत विचारों से ऊपर उठकर विश्व बन्धुत्व, मानव-प्रेम आदि को मूल्य के रूप में प्रतिष्ठित करना चाहते हैं।

केदारजी की कविता का अगला महत्वपूर्ण पक्ष उसकी प्रगतिशीलता है। प्रगतिशील कवि मानव के श्रम एवं कर्म-सौन्दर्य पर विशेष बल देते हैं। कवि कोई बाह्य चमत्कार या शक्ति पर विश्वास न करके आत्मिक शक्ति पर ज़ोर देते हैं। मानव की जिजीविषा और संघर्ष चेतना में कवि आस्था रखते हैं। 'बैल' शीर्षक कविता में -

''जलती हुई आग
और ऊँघते हुए किस्सों के बीच
वह एक ऐसा जानवर है जो दिन भर
भूसे के बारे में सोचता है
रात भर
ईश्वर के बारे में।''[२७]

यहाँ 'बैल' कोई पालतू जानवर न रह कर निर्मल कृषक संस्कार से ओतप्रोत मानवीय श्रम का मूर्त रूप बन गया है।

केदारजी पर अपने परिवेश का प्रभाव भी खूब पड़ा है। बचपन में दादी के मुँह से सुनी हुई कहानियों ने बालक केदार पर विशेष प्रभाव डाला था। गाँव का वातावरण भी अनोखा था। केदारजी के घर के पास ही भागड़नाला बहता था जो गंगा एवं सरयू को मिलाता था। जाड़े के मौसम में भागडनाले में अल सुबह नहाने के लिए जाने वाली स्त्रियों की गंगा मैया की स्तुति से बालक केदार की काव्य चेतना एवं संगीत की रुचि प्रभावित हुई थी।

कवि के लिए गाँव का परिवेश भी प्रेरणादायक रहा। केदारजी के शब्दों में- "गाँव में परिस्थिति के साथ जीने की शिक्षा मिलती है। तैरना, पैदल चलना, पेड़ पर चढ़ना- ये सब गाँव के उपहार हैं। बाढ़ की पहली स्मृति नदी का विराट रूप है। मैं भयभीत हुआ था। उनकी गगन भेदी आवाज़, अचानक गड़गड़ घड़ाम की आवाज़ें, दूर से आती नावे अपने पालों के पंख फैलाए उड़ने को तैयार, चीलों की तरह, शाम को कहीं डूब जाता सूरज, बार बार मुस्कुराकर कुछ कहता-सा, उगते पौधे, हाथों में छुपाये सहमे हुए अंकुर, बढ़ती बेलें, खिलते फूल, सभी का प्रभाव मन पर पड़ता था।"[२८]

इस प्रकार हम देखते है कि केदारजी के वैयक्तिक जीवन और परिवेश का प्रभाव कितना गाढ़ एवं विस्तार पूर्ण है। इसी प्रेरणा के फलस्वरूप वे अपनी कविता के लिए रचनात्मक ऊर्जा अर्जित कर सके।

केदारनाथ सिंह का रचनात्मक व्यक्तित्व :

समकालीन कविता के सशक्त हस्ताक्षर केदारनाथ सिंह जी के रचनात्मक व्यक्तित्व को रूपायित करने में अनेक बातों का समावेश हुआ है। एक ठेठ गाँव में जन्म लेकर पले-बढ़े, वहाँ की संस्कृति तथा प्रकृति का प्रभाव केदारजी की आरंभिक रचनाशीलता में देखने को मिलती है। केदारजी के बचपन में औपचारिक शिक्षा के प्रचार के न होने के कारण गाँव में साहित्यिक वातावरण प्राप्त न हो सका। लेकिन गाँव में लोक- साहित्य की समृद्ध परंपरा थी। यह लोक-साहित्य मौखिक होता था। विभिन्न धार्मिक एवं सांस्कृतिक अवसरों पर ये लोकगीत गाये जाते थे। इसके बारे में कवि की उक्ति देखें- "साहित्यिक माहौल गाँव में कोई नहीं था, पर लोक जीवन की जो अपनी स्वतः स्फूर्त रचनाशीलता होती है, वह मेरे गाँव में थी। इन्हीं लोक-गीतों और लोक-कथाओं के बीच मैं पला-बढ़ा।"[२९] मांगलिक अवसर पढ़ाये जाने वाले रामचरित मानस का प्रभाव, उसकी कथा, उसका संगीत और लय उन्हें बहुत पसंद था।[३०] रात में सोने के समय दादी से सुनी गई कहानियों से लोककथा से संबन्ध बना। जाड़े के दिनों में भोर में गंगा-स्नान के लिए जाती स्त्रियों के गीतों आदि का मिला-जुला असर आपकी कविताओं में झलकती है। इन गीतों तथा लोककथाओं की मौखिक परंपरा को पुस्तकों में ढूँढने से कोई फायदा नहीं है। गाँव की इन्हीं सांस्कृतिक धरोहर के बारे में कवि के शब्द देखें- "उस समाज में कविता होती है, लेकिन उस प्रचलित रूप में वह नहीं होती है, जिसे हम जैसे शहरों में पाते हैं। साहित्य वहाँ बहुत कुछ मौखिक परंपरा का हिस्सा होता है और उसकी जडें बहुत गहरी होती हैं।"[३१]

लोकगीतों और सांस्कृतिक विरासतों को जिलाये रखने के उद्देश्य से लेखन की परंपरा की शुरुआत हुई। गाँव का अपना मौखिक साहित्य, मौखिक परंपरा को नष्टप्राय होते देखकर कवि अपनी चिंता यों व्यक्त करते हैं-"गाँव जिस संस्कृति के बिना, पर शताब्दियों से जीवित था, उस संस्कृति का मूल आधार क्षरित हो रहा है।"[३२]

अपने पिताजी से राजनीति तथा संगीत में रुचि प्राप्त करने के बारे में उन्होंने जिक्र किया है- "मेरे पिताजी की राजनीति में सक्रियता थी जो अब पचासी वर्ष के हो गये हैं।... मेरे भीतर की रचनाशीलता को रूपायित करने में उस उत्तेजनशील स्वतः स्फूर्त परिवेश का हाथ था।"[३३] पिताजी के राजनीति में भाग लेने के कारण उन्हें बचपन से ही राजनीति से संबन्धित चर्चाएँ सुनने का अवसर मिला था। १९४२ के बलिया क्रान्ति में भाग लेने वालों में आपके पिताजी भी थे। गोली की बौछार में लहू-लुहान पड़े पिताजी तथा अन्य कांग्रेस कार्यकर्ताओं से प्रभावित होकर आपने अपनी पहली कविता लिखी। यह सुभाषचन्द्र बोस पर लिखी कविता थी। इसके बाद बनारस के स्कूल के वातावरण में गाँधीजी पर एक कविता लिखी। यह कविता १९४८ में 'आज' नामक दैनिक के साहित्यिक पृष्ठ पर छापी गयी थी। एक प्रमुख पत्रिका में प्रकाशित होने के नाते यह कविता उनके ही अध्यापकों की प्रशंसा एवं अध्ययन का पात्र बनी। इसके बारे में कवि यों जिक्र करते हैं- "जब गाँधीजी की मृत्यु हुई, मैं छठी कक्षा में था। स्कूल की मैगज़ीन के लिए मैंने गाँधीजी पर कविता लिखी। हमारे अध्यापक की रुचि पुराने ढंग की कविता में थी। उन्होंने छापी ही नहीं। उन्होंने कहा इसमें छंद, लय कुछ भी नहीं है। पर मुझे लगा इसमें छंद भी है, लय भी है, फिर ये अगले बरस छपी।"[३४]

गाँव की प्राइमरी शिक्षा के बाद केदारनाथ सिंह चौथी कक्षा से लेकर बनारस में पढ़ने लगे। उदय प्रताप कॉलेज के साहित्यिक माहौल ने आपको प्रभावित किया था। इसके बारे में केदारनाथ सिंह जी यों कहते हैं- "बनारस के तब के साहित्यिक माहौल को आज़ादी के आस-पास की राजनीतिक गतिविधियाँ संचालित करती थी। उस समय का सारा का सारा साहित्य किसी न किसी रूप में आज़ादी की लड़ाई से जुड़ा हुआ था।"[३५] लेकिन तत्कालीन राष्ट्रीय चेतना की कविताओं में उनकी रुचि नहीं थी। उनके प्रिय

काव्य विषय रहे प्रकृति और संगीत। इनसे आकृष्ट होकर वे गीतों की रचना करने लगे। उदय प्रताप कॉलेज के अध्ययन-काल में ही बच्चन, दिनकर, सुमन आदि दिग्गज कवियों से वे प्रभावित हुए थे। कॉलेज के वातावरण के बारे में केदारजी कहते हैं- उस वक्त उदय प्रताप कॉलज एक मशहूर कॉलज था जिसमें स्कूल भी था। वहीं मैं भी गया।... शायद वह लम्हा पहली बार मुझे भी लापरवाही से देखा होगा। कुछ हुआ था तो अद्‌भुत था, नया था, अनोखा था, वो लम्हा बयान से बाहर था।[३६] बनारस के स्कूली दिनों में केदारजी के अंदर काव्य-चेतना का रूपायन हुआ था।

केदारजी अपनी गीति-चेतना को प्रसिद्ध गीतिकार शंभूनाथ सिंह का प्रभाव मानते हैं। कवि के ही शब्दों में- ''तब बनारस की कवि गोष्ठियों में शंभूनाथ सिंह के गीतों की गूँज थी। शंभूनाथ सिंह के साथ-साथ त्रिलोचन, नामवर सिंह आदि का भी उन पर गहरा प्रभाव पड़ा है।''[३७]

केदारनाथसिंह त्रिलोचन को अपना काव्य गुरु मानते हैं। त्रिलोचन के प्रभाव को लेकर कवि यों लिखते हैं- ''मैं हाइस्कूल में था। एक कविता लिखी थी। त्रिलोचन जी को पसन्द आ गई। पत्रिका 'समाज' में छपने वाली ये मेरी पहली रचना थी। तब मैं छन्द में लिखता था। त्रिलोचन जी की प्रेरणा से दो पुस्तकें पढ़ीं। पहली कविता की पुस्तक थी धरती' और दूसरी अज्ञेय द्वारा संपादित 'तारसप्तक'।''[३८] अपने गुरु-ऋण चुकाने के तौर पर केदारजी ने 'अकाल में सारस' संग्रह को त्रिलोचन केलिए समर्पित किया है।

केदारनाथ सिंह अज्ञेय द्वारा संपादित 'तीसरा सप्तक' के सशक्त कवि हैं। अज्ञेय के साथ हुए अपने परिचय और उनके प्रभाव को कवि जीवन का अनोखा अनुभव मानते हैं। एक साहित्यिक समारोह में केदारजी को कविता-पाठ करने का मौका मिला था और उसके मुख्य अतिथि अज्ञेय थे। अज्ञेय को केदारजी की कविता पसंद आयी और उन्होंने उसे अपनी पत्रिका 'प्रतीक' में छपवाई।[३९]

त्रिलोचन और अज्ञेय के अतिरिक्त अनेक देशी तथा विदेशी साहित्यकारों का भी प्रभाव केदारजी पर पड़ा था। रामायण के कई प्रसंगों ने उनकी रचनात्मकता को गति एवं दिशा दी है। बचपन के पाठ्यक्रम के अन्तर्गत रामायण का धनुष तोड़ने के प्रसंग ने आपको अत्यंत प्रभावित किया था।

नई कविता के मर्मज्ञ आलोचक नामवर सिंह, अपने गुरु हजारीप्रसाद द्विवेदी आदि ने भी उनके काव्य-पथ प्रशस्त किये हैं। नामवर जी को केदारजी अपना ज्ञानगुरु मानते हैं।[४०] केदारजी सदैव हज़ारी प्रसाद द्विवेदी की अध्यापन-शैली एवं सृजनात्मक व्यक्तित्व से प्रभावित होते रहे। यही वजह है कि आगे केदारजी स्वयं अध्यापक बनकर अपने शिष्यों के मन मोह लेते रहे। इनके अलावा कवि के रचनात्मक व्यक्तित्व को उर्जा देने वालों की सूची में शिवप्रसाद सिंह, रमेशकुंतलमेघ, आदि के नाम भी आ जाते हैं। आपके अंग्रेज़ी के अध्यापक चन्द्रवली सिंह, संस्कृत के आचार्य अनन्तराम शास्त्री मराठा आदि के भी आप ऋणी रहे।

देशी कवियों में तुलसी, कबीर, गालिब, रवीन्द्रनाथ ठाकुर, प्रसाद, पंत, निराला, महादेवी, केदारनाथ अग्रवाल, मुक्तिबोध, नागार्जुन, अख्तर उल इमान, जीवनानन्द दास, भिखारी ठाकुर, सर्वेश्वर, अज्ञेय, धूमिल आदि आपके प्रिय कवि रहे।

विश्व लेखकों में नेरूदा, रिल्के, बॉदलेयर, इलियट, चेखव, देस्तोयवस्की, एजरा पाऊण्ड, मिलोश, शिंबोस्की, टेड हयूज, पाल एलुअर, सीमस हीनी, बोर्खज़, पाँज, निकोनर पारो, उख्यतोवा, स्वेतायोना, सिल्विया पाँथ, महमूद दखेश, एमिलि डिकिन्सन, एलिसबथ विशप, लर्किन, फुरोग, फरोगजाद ली पै, तू-फू, गोडफ्रिक बेन और एजिसेवर्गर को ये प्रिय मानते हैं। विश्व कविता के प्रति अपने आकर्षण को लेकर कवि कहते है- विश्व कविता का परिचय कवि को अंग्रेज़ी के माध्यम से हुआ था। विश्वकविताओं में फ्रेंच, स्पैनिश, लैतिन अमेरिका की कविताओं का परिचय आपको हुआ था। इनमें काफी अधिक प्रभाव नेरुदा का उन पर पड़ा है। नेरुदा उनके आदर्श कवि हैं।... विषयगत विविधता और नवीनता जो नेरुदा के यहाँ है केदारजी बारहा उनकी चर्चा करते हैं। वे कविता में चीज़ों को धीरे धीरे आत्मसात करने के हिमायती हैं जैसा नेरुदा ने किया। नेरूदा का जिस तरह काव्य वैभव है, भाषा की पकड़ है, प्रकृति और पशुओं से जैसा नेरुदा का सामीप्य है, केदारजी वैसा ही अपनी कविता को संभव करते हैं।[४१] केदारजी की 'बैल'[४२] 'जानवर'[४३] आदि कविताओं में नेरुदा का प्रभाव देखा जा सकता है। 'बाघ' शीर्षक कविता पर हँगरी भाषा के कवि वेलिंस्की का प्रभाव पड़ा है। इस प्रकार हम देखते है कि केदारनाथ सिंह की रचनात्मक ऊर्जा का श्रोत देशी परिवेश से ही नहीं; वैश्विक धरातल से भी संपृक्त रहा है।

संदर्भ-सूची -

१ कवि केदारनाथसिंह, भारत यायावर और राजा खुगशाल, पृ. ४४
२ तीसरा सप्तक, संपादक, अज्ञेय, पृ. ११४
३ केदारनाथसिंह का काव्यलोक डॉ शेपरपाल सिंह, पृ. १८१

४ ज़मीन पक रही है, केदारनाथसिंह, पृ. ५८
५ मेरे साक्षात्कार, केदारनाथसिंह, पृ. ६३
६ वहीं, पृ. ६४
७ वहीं, पृ. ६४
८ तीसरा सप्तक, संपा अज्ञेय, पृ. ११६
९ उत्तर केदार-सुधीश पचोरी, पृ. ५४-६५
१० मेरे समय के शब्द, केदारनाथ सिंह, पृ. १९१
११ मेरे साक्षात्कार, कवि केदाराथसिंह, पृ. १०७
१२ वहीं, पृ. ६८
१३ मेरे साक्षात्कार, केदाराथसिंह, २००३, पृ. ६८
१४ अकाल में सारस, ठंड से नहीं मरते शब्द, पृ. १०२-१०३
१५ तीसरा सप्तक, केदारनाथ सिंह, वक्तव्य, पृ. ११४
१६ मेरा साक्षात्कार, केदारनाथ सिंह, पृ. १४६
१७ वहीं, पृ. ७२
१८ मेरा साक्षात्कार, केदाराथ सिंह, पृ. ५९
१९ वहीं, पृ. १३९
२० अकाल में सारस, केदाराथ सिंह, पृ. ८३
२१ मेरे साक्षात्कार, केदाराथ सिंह, पृ. ६९
२२ उत्तर कबीर और अन्य कविताएँ, केदाराथ सिंह, पृ. १०२
२३ अकाल में सारस, केदाराथ सिंह, पृ. ४२
२४ मेरे साक्षात्कार, केदाराथ सिंह, पृ. ६४
२५ यहाँ से देखो, केदाराथ सिंह, पृ. ७७-७८
२६ यहाँ से देखो - केदारनाथ सिंह, पृ. ५३
२७ ज़मीन पक रही है, केदारनाथसिंह, पृ. ३९
२८ मेरे साक्षात्कार, केदाराथ सिंह, पृ. १६०
२९ मेरे साक्षात्कार, केदाराथ सिंह, पृ. ३४
३० मेरे समय के शब्द, केदाराथ सिंह, पृ. १९२
३१ मेरे समय के शब्द, केदाराथ सिंह, पृ. १९२
३२ मेरे साक्षात्कार, केदाराथ सिंह, पृ. ३१
३३ मेरे साक्षात्कार, केदाराथ सिंह, पृ. ८३
३४ उत्तर केदार-सुधीश पचौरी, पृ. २७
३५ मेरे साक्षात्कार, केदाराथ सिंह, पृ. १६०
३६ वहीं
३७ तारसपत्क (सं अज्ञेय), वक्तव्य, पृ. १२५
३८ उत्तर केदार, सुधीश पचौरी, पृ. २६
३९ मेरे साक्षात्कार, केदाराथसिंह, पृ. १६०
४० केदारनाथ सिंह और उनका समय, निरंजन सहाय, पृ. १०
४१ साक्षात्कार त्रैमासिक, नवंबर २००४
४२ ज़मीन पक रही है, केदाराथ सिंह, पृ. ३८
४३ यहाँ से देखो, केदाराथ सिंह, पृ. ३०